प्राक्कथन

प्राक्कथन

' सुनो भाई साधो ', ' कहत कबीरा ' जैसी काव्यपंक्तियों का समाज में बहुप्रचलन देखनेपर यह स्पष्ट होने में अधिक देर नहीं लगती कि कबीर संत सम्प्रदाय, हिन्दी साहित्य प्रेमियों के अलावा सामान्य लोगों की भी आँखों के तारे थे। कबीर को न जाननेवाला आदमी बिरला ही हो सकता है। मैंने तो बचपन में ही दादाजी के मुँह से कबीर के दोहे सुने थे। महाविद्यालयीन शिक्षा तक आते-आते कबीर के साहित्य को बडी नजदीकी से देखने का मौका मिला। कबीर द्वारा बाह्याडम्बर पर कडा प्रहार करते हुए देखने को मिला, अंधश्रध्दा और जाति-पाँतिगत बंधनों पर गोलियों की बौछार देखने को मिली और धार्मिक कर्मकांडों का सिरच्छेद होते हुए देखने को मिला। कबीर ने अनुचित बातों पर सीधा प्रहार किया है।

कबीर जन्मजात निर्भिक और स्पष्टवक्ता थे। वे डंके की चोट से अपना कथन सुनाते थे। उनके सामने कोई उच्च-नीच, गरीब-अमीर, काला-गोरा, हिन्दू-मुस्लिम नहीं था; सभी समान थे। कबीर के इसी अलौकिक कार्य को देखनेपर मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई सूर्य घने अँधेरे को चीरकर उदयित हो रहा हो।

कबीर के तत्व थे - निर्गुण ईश्वर में विश्वास, अहिंसा और सत्यकथन। उनके विचार बडे ही मौलिक हैं। महात्मा गांधी और कबीर के विचारों में साम्य देखकर कबीर को भी 'गांधी' इस उपाधि से अभिहित किया जाता है; लेकिन ' नारी की झाँई परत अंधा होत भुजंग ' जैसी उनकी कुछ काव्य-पंक्तियों को लेकर आलोचक उनका नारी-संबंधी दृष्टिकोण कलुषित बतलाते हैं। उनके नारी संबंधी पद भी प्रारंभ में कुछ ऐसे ही लगते हैं; लेकिन उनका अर्थ अलग है। एक महान समाज-सुधारक पर आलोचकों द्वारा नारी-निंदक का आरोप किया जाना तथा अक्षुण्ण प्रतिभाशाली युगपुरुष द्वारा भी नारी के लिए कुछ अपशब्दों का प्रयोग किया जाना आदि बातों को देखने पर मेरे मन में एक अजीब उलझन-सी निर्माण हो गयी। इसी

संदर्भ में मैंने सर्वप्रथम श्रध्देय गुरुदेव श्री.शरद कणबरकर जी से चर्चा की और उनकी प्रेरणा से ही ` डॉ.श्यामसुंदरदास द्वारा संपादित` कबीर ग्रंथावली` में अभिव्यक्त कबीर के नारी संबंधी विचार` इस विषय का चयन किया । यह मेरा अहोभाग्य रहा कि इस विषय के लिए प्रा.शरद कणबरकर जी जैसे विद्वान गुरुवर मुझे निर्देशक के रूप में मिले ।

प्रस्तुत विषय का अध्ययन करते वक्त मेरे मन में अनेक सवाल उठे, जो निम्नप्रकार हैं --

१) कबीर का जीवनपरिचय गहराई से प्राप्त किया जाए ।

२) कबीर-पूर्व काल में नारी-संबंधी धारणाएँ क्या थीं ? प्राचीन काल से आधुनिक काल तक नारी संबंधी दृष्टिकोण कैसे परिवर्तित होता गया ? स्त्री और पुरुष के संबंध कैसे होने चाहिए ? आदर्श स्त्री और पुरुष किसे कहा जा सकता है ?

३) कबीर के नारी संबंधी विचार कैसे हैं ? कबीर के मतानुसार नारी के निंदाजनक और प्रशंसापात्र रूप कौन-कौन से हैं ? कबीर ने नारी की प्रशंसा और निंदा के लिए किन-किन उपमाओं का प्रयोग किया है ? यदि कबीर नारी की निंदा भी करते हैं तो उसके कारण कौनसे थे ?

मेरे इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढने के लिए मैंने अपने एम्.फिल्.के लघु शोध-प्रबंध की रूपरेखा निम्न प्रकार बनायी --

अध्याय पहला --

कबीर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

अध्याय दूसरा -

नारी-पुरुष का पारस्पारिक सम्बन्ध ।

अध्याय तीसरा -

कबीर द्वारा नारी संबंधी व्यक्त विचार ।

उपसंहार -

BARR. BAL... ...KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI ...ITY, KOLHAPUR.

पहले अध्याय में मैंने प्राप्त सामग्री एवं प्रमाणभूत ग्रंथों के आधार पर कबीर के जीवनसंबंधी प्रामाणिक निष्कर्ष निकालने की कोशिश की है ।

दूसरे अध्याय में मैंने प्राचीन काल से आधुनिक काल तक की नारी का विकास एवं स्वरूप संक्षेप में प्रस्तुत किया है साथ ही नर-नारी संबंध की चर्चा करते हुए आदर्श नर और आदर्श नारी के कुछ समाजमान्य लक्षण भी प्रस्तुत किये हैं ।

तीसरे अध्याय में मैंने कबीर के नारी संबंधी विचारों को स्पष्ट किया है । कबीर द्वारा नारी के निंदाजनक रूप, नारी के प्रशंसापरक रूप, नारी की प्रशंसा-निंदा के लिए प्रयुक्त उपमाएँ तथा नारी-निंदा के कारण आदि बातों को मैंने इस अध्याय में स्पष्ट कर दिया है ।

उपर्युक्त बातों संबंधी अध्ययन करने के बाद जो निष्कर्ष हाथ लगे वे उपसंहार में रखे हैं और अंत में संदर्भ ग्रंथों की सूची भी जोड दी है ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध श्रध्देय गुरूदेव प्रा.शारद कणाबरकर जी के स्नेहिल एवं विद्वत्तापूर्ण निर्देशन, प्रोत्साहन तथा शुभाशीर्वाद का ही परिणाम है । उनकी प्रेरणा एवं परिश्रम के कारण ही यह शोध कार्य परिपूर्ण हो सका है । उन्होंने अपने व्यस्ततापूर्ण समय में से सदैव मेरी विषम परिस्थितियों में मेरी सुविधानुसार समय देकर मेरा मार्गदर्शन किया है । औपचारिकता के नाम पर आभार प्रदर्शित कर उनके गुरू-ऋण से मुक्त होना केवल असंभव है ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिन्दी विभाग के प्रमुख श्रध्देय गुरूदेव डॉ.वसंत केशव मोरे जी के प्रति मैं आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मेरी समस्याओं को सुलझाकर उपकृत किया है । डॉ.व्ही.व्ही.द्रविड जी, प्रा.एम.के.तिवले जी, प्रा.श्रीमती रजनी भागवत जी, प्रा.मुजावर जी., डॉ.के.पी. शहा जी, प्रा.वेदपाठक जी, डॉ.बी.बी.पाटील जी, प्रा.जी.एस.हिरेमठ जी आदि का मुझे बहुमोल मार्गदर्शन मिला । मैं आप सभी का हृदयपूर्वक आभारी हूँ ।

पारिवारिक ग्रामीण वातावरण एवं अनेक आपत्तियों के कारण एम्. - फिल्. की उपाधि प्राप्त करना मेरे लिए कठिन था; लेकिन वात्सल्यमरी प्रेरणा देनेवाले और अपनी ओर से सक्रीय सहयोग देनेवाले मेरे पथ-प्रदर्शक गुरुदेव डॉ.सुधाकर गोकाककर और बी.एड.(हिन्दी) कॉलेज, बेलगांव के प्राध्यापक गुरुदेव श्री.आर.एन.हिरेमठ जी के प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ।

मुझे इस संशोधन कार्य में निरंतर प्रेरणा देनेवाले दौलत विश्वस्त संस्था के सचिव श्री.के.वाय.केरकर जी को मैं धन्यवाद देता हूँ। साथ ही यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,हलकर्णी के प्राचार्य, सभी प्राध्यापक,ग्रंथपाल एवं सभी कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

उन सभी लेखकों,विद्वानों तथा नारी-भावना संबंधी शोध-प्रबंधों के लेखकों के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ, जिनके ग्रंथों से मुझे सहायता मिली है। मैं उन समस्त पुस्तकालयों,विशेष रूप से बॅरिस्टर खर्डेकर लायब्ररी, कोल्हापुर, शिवराज महाविद्यालय लायब्ररी,गडहिंग्लज, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय लायब्ररी, हलकर्णी के ग्रंथपालों का विशेष आभारी हूँ, जिनके सौजन्यपूर्ण सहयोग से मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका हूँ।

इस अवसर पर मैं अपने माता-पिताजों का स्मरण भी नितांत आवश्यक समझता हूँ। उनकी तपस्या के कारण ही मुझे यह दिन देखने को मिला है। प्रिय पत्नी के भी कुछ मददपूर्ण क्षण अनमोल रहे। मेरे इस कार्य में सास-ससूर, मित्र, रिश्तेदार,सगे-संबंधियों के आशीर्वाद भी कुछ कम नहीं रहे। इन सभी लोगों के आशीर्वाद का ही यह लघु शोध-प्रबंध फल है।

टंकलेखनिक श्रीयुत बाळकृष्ण रा.सावंत ने उत्तम टंकलेखन कर और ओम प्रेस, बेलगाम के मालिक श्री.विलास पोटे जी ने समय पर उत्तम बाईंडिंग कर दिया इसलिए मैं उनका भी आभारी हूँ।

भविष्य में भी इन सब लोगों के आशीर्वादमयी योगदान की कामना करते हुए समादरणीय समीक्षकों के सामने प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध अवलोकनार्थ प्रस्तुत करता हूँ।